जूट की खेती

जूट की खेती हेतु गर्म तथा नम जलवायु की आवश्यकता होती है। 100 से 200 से0मी0 वर्षा तथा 24 से 35 डिग्री सेंटीग्रेड तापक्रम उपयुक्त है। जूट के रेशे से ब्रिग बैग्स, कनवास, टिवस्ट एवं यार्न के अलावा कम्बल, दरी, कालीन, ब्रुश एवं रस्सियां आदि तैयार की जाती हैं। जूट के डंठल से चारकोल एवं गन पाउडर बनाया जाता है।

भूमि का चुनाव :

ऐसी भूमि जो समतल हो जिसमें पानी का निकास अच्छा हो, साथ ही साथ पानी रोकने की पर्याप्त क्षमता वाली दोमट तथा मटियार दोमट भूमि इसकी खेती के लिए अधिक उपयुक्त रहती है।

भूमि की तैयारी :

मिट्टी पलटने वाले हल से एक जुताई तथा बाद में 2-3 जुताइयां देशी हल या कल्टीवेटर से करके, पाटा लगाकर भूमि को भुरभुरा बनाकर खेत बुवाई के लिए तैयार किया जाता है। चूंकि जूट का बीज बहुत छोटा होता है, इसलिए मिट्टी का भुरभुरा होना आवश्यक है ताकि बीज का जमाव अच्छा हो। भूमि में उपयुक्त नमी जमाव के लिए अच्छी समझी जाती है।

संस्तुत प्रजातियां एवं बुवाई का समय :

जूट की दो प्रमुख किस्में होती हैं। प्रत्येक किस्म की प्रजातियां निम्नवत् हैं :-

1. कैपसुलेरिस :

इसको सफेद जूट या कहीं-कहीं ककिया बम्बई भी कहते हैं। इसकी पत्तियां स्वाद में कडुवी होती हैं। इसकी बुवाई फरवरी से मार्च में की जाती है। भूमि के आधार पर निम्न प्रजातियों की संस्तुति की गयी है।

जे0आर0सी0 - 321 : यह शीघ्र पकने वाली जाति है। जल्दी वर्षा होने तथा निचली भूमि के लिए सर्वोत्तम पाई गई है। जूट के बाद लेट पैडी (अगहनी धान) की खेती की जा सकती है। इसकी बुवाई फरवरी-मार्च में करके जुलाई में इसकी कटाई की जा सकती है।

जे0आर0सी0 - 212 : मध्य एवं उच्च भूमि में देर से बोई जाने वाली जगहों के लिए उपयुक्त है। बुवाई मार्च से अप्रैल में करके जुलाई के अन्त तक कटाई की जा सकती है।

यू0पी0सी0 - 94 (रेशमा) : निचली भूमि के लिए उपयुक्त बुवाई फरवरी के तीसरे सप्ताह से मध्य मार्च तक की जाए 120 से 140 दिन में कटाई योग्य हो जाती है।

जे0आर0सी0 - 698 : निचली भूमि के लिए उपयुक्त इस प्रजाति की बुवाई मार्च के अन्त में की जा सकती है। इसके पश्चात् धान की रोपाई की जा सकती है।

अंकित (एन0डी0सी0) - 2008 : निचली भूमि के लिए उपयुक्त इस प्रजाति की बुवाई 15 फरवरी से 15 मार्च तक की जा सकती है। सम्पूर्ण भारत के लिए संस्तुत।

एन0डी0सी0.9102 : पूर्वी उत्तर प्रदेश के लिए संस्तुत।

2. ओलीटोरियस :

इसको देव या टोसा जूट भी कहते हैं। इसकी पत्तियां स्वाद में मीठी होती हैं। इसका रेशा केपसुलेरिस से अच्छा होता है। उच्च भूमि हेतु अधिक उपयुक्त है। इसकी बुवाई अप्रैल के अन्त से मई तक की जाती है।

जे0आर0ओ0 - 632 : यह देर से बुवाई और ऊँची भूमि के लिए उपयुक्त है। अधिक पैदावार के साथ-साथ उत्तम किस्म का रेशा पैदा होता है। इसकी बुवाई अप्रैल से मई के अन्तिम सप्ताह तक की जा सकती है।

जे0आर0ओ0 - 878 : यह प्रजाति सभी भूमियों के लिए उपयुक्त है। बुवाई मध्य मार्च से मई तक की जाती है। यह समय से पहले फूल आने हेतु अवरोधी है।

जे0आर0ओ0 - 7835 : इस जाति में 878 के सभी गुण विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त अधिक उर्वरा शक्ति ग्रहण करने के कारण अच्छी पैदावार होती है।

जे0आर0ओ0 - 524 (नवीन) : उपरहार एवं मध्य भूमि के लिए उपयुक्त बुवाई मार्च तृतीय सप्ताह से अप्रैल तक की जाये। 120 से 140 दिन में कटाई योग्य हो जाती है।

जे0आर0ओ0 - 66 : यह प्रजाति मई जून में बुवाई करके 100 दिन में अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है।

बीज दर :

सीड ड्रिल से पंक्तियों में बुवाई करने पर कैपसुलेरिस प्रजातियों के लिए 4-5 किग्रा0 तथा ओलिटेरियस के लिए 3-5 किग्रा0 बीज प्रति हे0 पर्याप्त होता है। छिड़कवां बोने पर 5-6 किग्रा0 बीज की आवश्यकता होती है।

बीज शोधन :

बुवाई से पहले बीज को थीरम 3 ग्राम अथवा कार्बेन्डाजिम 50 डब्लू.पी. 2 ग्राम प्रति किलो बीज से शोधित करके बोना चाहिए।

बुवाई की विधि :

बुवाई हल के पीछे करनी चाहिए। लाइनों से लाइनों का दूरी 30 से0मी0 तथा पौधे से पौधे की दूरी 7-8 से0मी0 एवं गहराई 2-3 से0मी0 से अधिक नहीं होनी चाहिए। मल्टीरो जूट सीड ड्रिल के प्रयोग से 4 लाइनों की बुवाई एक बार में हो जाती है और एक व्यक्ति एक दिन में एक एकड़ की बुवाई कर सकता है।

उर्वरक :

उर्वरक का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर किया जाए अथवा कैपसुलेरिस किस्मों के लिए 60:30:30 और ओलीटोरियस के लिए 40:20:20 किग्रा. नत्रजन फास्फोरस एवं पोटाश प्रति हे॰ की दर से बुवाई से पूर्व देना चाहिए। यदि बुवाई के 15 दिन पूर्व 100 कु॰ कम्पोस्ट प्रति हे॰ डाल दी जाए तो पैदावार अच्छी होती है। आवश्यकतानुसार सिंचाई की जानी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण :

बुवाई के 20-25 दिन बाद खरपतवार निराई करके निकाल देना चाहिए और विरलीकरण करके पौधे से पौधे की दूरी 6-8 से0मी0 कर देना चाहिए। खरपतवार का नियन्त्रण खरपतवार नाशी रसायनों से भी किया जा सकता है। पौध उगने से पूर्व पेन्डीमेथिलीन ई.सी. 3.3 लीटर अथवा फ्लूक्लोरोलिन 1.50 से 2.50 किग्रा0/हेक्टर 700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने के बाद जुताई करके मिट्टी में मिला देने से खरपतवार नहीं उगते हैं। खड़ी फसल में खरपतवार नियंत्रण हेतु 30-35 दिन के अन्दर क्यूनालफास इथाइल 5 प्रतिशत की एक लीटर प्रति हे. की दर से छिड़काव करना प्रभावी होता है।

फसल सुरक्षा :

प्रदेश में जूट की फसल प्रायः दो बीमारियों से प्रभावित होती है : जड़ तथा तना सड़न तथा इन बीमारियों से कभी-कभी फसल पूर्णतः नष्ट हो जाती है। इससे बचाव के लिए बीज को शोधित करके ही बोना चाहिए। इन बीमारियों से बचाव के लिये ट्राइकोडरमा विरिडी 5 ग्राम प्रति किलो. बीज की दर तथा 2.5 किलो. प्रति हे. 50 किग्रा. गोबर की सड़ी खाद में मिलाकर प्रयोग करना चाहिए।

जूट फसल पर सेमीलूपर, एपियन, स्टेम बीविल कीटों का प्रकोप होता है। इन कीटों के रोकथाम हेतु 1.5 लीटर डाइकोफाल को 700-800 लीटर पानी में घोलकर फसल की 40-45, 60-65 तथा 100-105 दिन की अवस्थाओं पर छिड़काव किया जा सकता है। इन कीटों के नियंत्रण के लिए नीम उत्पादित रसायन एजादीरेक्सीन 0.03 प्रतिशत के 1.5 लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये।

कटाई : उत्तम रेशा प्राप्त करने हेतु 100 से 120 दिन की फसल हो जाने पर कटाई की जा सकती है। जल्दी कटाई करने पर प्रायः रेशे की उपज कम प्राप्त होती है। लेकिन देर से काटी जाने वाली फसल की अपेक्षा रेशा अच्छा होता है। छोटे तथा पतले व्यास वाले पौधों को छांटकर अलग-अलग छोटे-छोटे बंडलों में (15-20 से0मी0) बांधकर दो तीन दिन तक खेत में पत्तियों के गिरने हेतु छोड़ देना चाहिए।

पौधों का सड़ाना : कटे हुए पौधों के बन्डलों को पहले खड़ी दशा में 2-3 दिन पानी में रखने के बाद एक दो पंक्ति में लगाकर तालाब या हल्के बहते हुए पानी में 10 से0मी0 गहराई तक जाकर बनाकर डुबोने के पूर्व पानी वाले खरपतवार से ढककर किसी वजनी पत्थर के टुकड़े से दबा देना चाहिए। साथ ही इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बन्डल तालाब की निचली सतह से न छूने पाये। सामान्य स्थिति होने पर 15-20 दिन में पौधा सड़कर रेश निकालने योग्य हो जाता है। बैक्टीरियल कल्चर के प्रयोग से सड़ान में 4 प्रतिशत समय की बचत के साथ-साथ रेशे की गुणवत्ता बढ़ जाती है।

रेशा निकालना एवं सुखाना : प्रत्येक सड़े हुए पौधों के रेशों को अलग-अलग निकालकर हल्के बहते हुए साफ पानी में अच्छी तरह धोकर किसी तार, बांस इत्यादि पर सामानान्तर लटकाकर कड़ी धूप में 3-4 दिन तक सुखा लेना चाहिए। सुखाने की अवधि में रेशे को उलटते-पलटते रहना चाहिए। सघन पद्धतियों को अपनाकर 25-35 कु0 प्रति हे0 रेशे की उपज प्राप्त की जा सकती है।